अपभ्रंश कथाकाव्य का स्वरूप

डॉ० सुनिल कुमार सिंह

अपभ्रंश में कथा को 'कहा' कहते हैं। प्राकृत की भाँति अपभ्रंश में भी कथाओं के तीन प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं। कुछ कथाएँ प्रबन्ध है, जिनमें महाकाव्य के गुण मिलते हैं और कुछ चरित्र प्रधान है जो प्रबन्ध काव्य की शैली में लिखी गयी है तथा कुछ धार्मिक विवरण मात्र हैं। जैसे स्वयंभू की रामायण चरित काव्य होने पर भी कवि ने उसे राम कथा कहा है। इससे यह सूचित होता है कि अपभ्रंश के कवि चरित और कथा में अन्तर नहीं मानते। आचार्य विश्वनाथ ने आख्यायिका को कथा की भाँति माना है। उसमें कवि वंश आदि का विवरण गद्य में कहा जाता है। वह आश्वासों में निबद्ध होती है। रुद्रट के मत में कथा की भाँति आख्यायिका भी गद्य में लिखी जाती है। अन्तर इतना ही है कि आख्यायिका में कवि का वंश कृत एवं आत्मचरित पद्य में नहीं होता।

कथा प्रबन्ध की मूल वस्तु है। उस में वस्तु–विवरण मुख्य होता है, किन्तु घटनाओं का विस्तार भी महत्त्वपूर्ण नहीं होता। कथा को गतिशील बनाये रखने के लिए काव्य में घटनाओं की योजना तथा अवान्तर कथाएँ भी सम्बद्ध देखी जाती है।